श्रीराम रक्षा स्तोत्र

(कोंकणी अर्थु सहित)

★

अनुवादकु :

इन्द्रकांत वासुदेव शेणै

★

श्री व्यासा प्रकाशन, गोवा.

श्रीराम रक्षा स्तोत्र

(कोंकणी अर्थु सहित)

★

अनुवादकु :

इन्द्रकांत वासुदेव शेणै

★

श्री व्यासा प्रकाशन, गोवा.

ग्रंथाचे नांव:– श्रीराम रक्षा स्तोत्र
मूळ भास:– संस्कृत
मूळ लेखकु:– बुध कौशिक रिषी
कोंकणी अनुवादकु:–इन्द्रकांत वासुदेव शेणै

प्रथम संस्करण:– मे १९८३

प्रकाशकु:– श्री व्यासा प्रकाशन,
C/o काशि मठ, बन्दोडा,
पोण्डा, गोवा–403401

मालकाचे नांव:– श्रीमति रत्नाबाई शेणै
C/o श्री काशि मठ, बन्दोडा,
पोण्डा, गोवा–403401

मुद्रक:– श्री. व्ही. एस. देशपांडे,
स्वस्तिक प्रिंटिंग प्रेस.
हंस टॉकीज रोड, बेळगांव

सर्व हक्क प्रकाशकाचे आधीनांतु

दोनी उत्रां

कोकणी साहित्य यज्ञ माळेंतुलें प्रथम फूल– श्रीमद भगवद्गीता भायर हाडलेलयि आमी महर्षि वाल्मीकीचे रामायण मुद्रण आरंभु करचे म्हण दवलेंले जाल्यारी ते धनाचे अभावानी तात्काळ स्थगित करचे पडले. ताजे बदलाक आतां आमी श्रीरामरक्षा स्तोत्र कोंकणी अर्थ सहित दीत्तात.

हे स्तोत्र आनंद रामायणातुले जन्मकाण्डांतु पंचवे सर्गातु अस्सा. हे बुध कौशिक रिषीनी स्वप्नांतु संकर–पार्वती गेले सभाषण रुपारि ऐकीले आनि तें ते रिषवर्यानी ब्रह्ममूहूर्तारि उठलोलयि लिखित करतु घेत्तले असि म्हणल्या.

सेगळे मन्त्रमय जावनु आसिल्ले हें राम रक्षा स्तोत्र अद्भूत दैवीक सामर्थ्यं भरलेले जावनु अस्सा हे सर्व अरिष्टांत सकून रक्षण करता. हें कोणियि

स्त्री-पुरुष आबाल वृद्धानी नित्य स्वंयचेयि समयारी पाठ करुयेत. साधारण शुचिर्भूत अस्सा जाल्यारि पूरो.

हे अद्भूत रामरक्षा स्तोत्राचो योग्य स्वीकारु कोंकणी उलौंचे जणांकडच्यान मेळतेले आनि तसिचि तांगेले सकटांगेले पूर्ण सहकरण मेळणु आमी प्रारंभु केल्लोलो कोंकणी साहित्य यज्ञ यशस्वी जावनु पूर्ण करुक जात्तलें म्हणू आशा करनु आनि ताकाची जावनु तेची ते प्रभु रामचंन्द्रालो अनुग्रहु मागून घेत्तात्ति. जय कोंकणी !

बन्दोडा, फोण्डा
गोवा मे १९८३

इन्द्रकांत वासुदेव शेणै

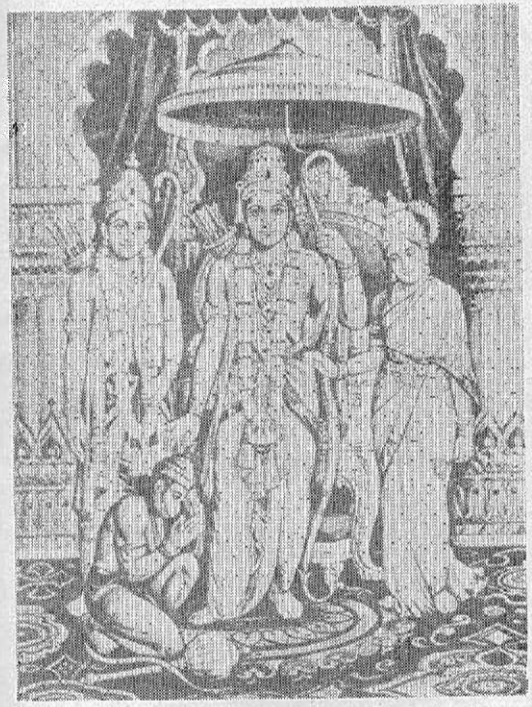

श्रीरामरक्षा स्तोत्र

श्रीगणेशाय नमः। अस्य श्रीरामरक्षा-स्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः। श्रीसीता-रामचन्द्रो देवता। अनुष्ठुप् छन्दः। सीता शक्तिः। श्रीमद्धनुमान् कीलकम्। श्रीराम-चन्द्रप्रीत्यर्थे श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रजपे विनि-योगः।

श्रीरामरक्षा स्तोत्राचो सरळ अर्थ

श्रीगणेशाक नमस्कारु ह्ये रामरक्षा स्तोत्राचो बुधकौशिक ऋषि अस्सती. श्री सीतासह रामचंद्रु देवता अस्सती. अनुषृप छन्द जावनु अस्सा. सीता शक्ति जावनु अस्सा श्रीमद्धनुमान ये स्तोत्राचो कीलकु जावनु अस्सा

श्रीरामचन्द्राले संतोषाक जावनु श्रीरामरक्षा स्तोत्रा मन्त्राची विनियोगु अस्सा.

अथ ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थम्। पीतं वासो वसानं नवकमलदल-स्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम्॥ वामाकारूढसीतामुख-कमलीमलल्लोचनं नीरदाभम्। नानालंकारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डनं रामचन्द्रम्॥ इति ध्यानम्।

ध्यानाचो आरंभु

जानु पर्यंत दीग हात आसिल्या, हातांत बाण व धनुषु धारण केल्लेल्या, बद्धपद्मासनारी स्थित आसिल्या, हळदूवे वस्त्र नेसिल्या, नव-कमळ पत्राप्रमाणे नेत्र असिल्या प्रसन्न एस्सले, दावेतांतु बेसल्ले सीतेले मुखकमलारी दृष्टि असिल्या मेघासमान दीस्सुचे, नानाप्रकाराचे

अलंकारानी सुशोभित आसिले, सुन्दर जटारुपी भूषण धारण केलेल्या श्रीरामचंद्राले ध्यान करचें.

ध्यानाचो अंत

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम्। एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्॥ १॥

रघुनाथाले चरित्र शेंभर कोटी श्लोकानी विस्तृत आस्सा तांतुले एक एक अक्षरयी मनिषाले महापातक नाशु करचे जावनु अस्सा (१)

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीव-लोचनम्। जानकीलक्ष्मणोपेतम् जटामुकुट-मण्डितम्॥ २॥

नीळ कमळावरी श्यामळ वर्णाचे, कमळावरी दोळे आसिल्ले जानकी आनी

लक्ष्मण ह्यांचे सह आसिल्ले, जटारूपी मुकुटांनी सुशोभित जावनु असिल्ले रामाले (२)

सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तं चरान्तकम्। स्वलीलया जगत् त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम् ॥ ३ ॥

हातांतु खड्ग, निषंग, धनुष, बाण आसिल्ले, राक्षसाचो नाशु करचो आनी स्वतःचे लीलेनी जगाचे रक्षणार्थ अवतार घेवचो जन्मरहित एस्सले प्रभूले ध्यान करनु ॥ ३ ॥

रामरक्षां पठेत् प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम्। शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः ॥ ४ ॥

सुज्ञ मनिषानी पाप नाश करचो आनी सर्व इच्छा पूर्ती करचो रामरक्षेलो पाठ करका जाल्लेलो. तो रघुकुलोत्पन्न मेगेले माथेचे

रक्षण करो आनी तो दशरथ पुत्रु मेगेले भाल प्रदेशाचो (४)

कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती। घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः ॥ ५ ॥

कौसल्यापुत्रु दोन्ही दोळेंचे रक्षण करो, आनी विश्वामित्राचो प्रिय शिष्यु दोन्ही कानांचे यज्ञरक्षक रामु नांकाचे रक्षण करो आनी लक्ष्मण प्रियु मुखाचो (५)

जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरत वन्दितः। स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः ॥ ६ ॥

विद्येचो निधी रामु मेगेले जिभेचो रक्षण करो. भरतान वन्दन केल्लेलो रामु मेगेले गळेचो दिव्य शस्त्रां असिल्लो रामु मेगेले दोन्हीयी

खांद्येचो रक्षण करो आनी शिवधनुषु मोडलोलो रामु मेगेले मुज्जेचो (६)

करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्य-जित्। मध्यं पातु खरध्वंसी नाभीं जाम्बवदाश्रयः ॥ ७ ॥

सीतापति रामु दोन्हीयी हातांचे (मनगटाथकून मुखारी) रक्षण करो आनी परशुरामाक जिकिल्लो रामु हृदयाचो. खर राक्षसालो नाशु केल्लोलो रामु मध्ये भागाचे रक्षणकरो आनी जाम्बवंतालो आश्रय स्थान आसिल्लो रामु नाभीचो (७)

सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः। ऊरू रघुत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत ॥ ८ ॥

सुग्रीवालो प्रभु दोन्हीयी कटि भागाचे रक्षण करो आनी हनुमंतालो नाथु दोन्हीयी

जङ्घेचो वयलो भाग. दोन्हीयी जङ्घेचो खालचोभाग राक्षसकुलांचे संहार करचो रघुश्रेष्ट रक्षण करो (८)

जानुनी सेतकृत् पातु जङ्घे दशमुखान्तकः। पादौ बिभिषण श्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः ॥ ९ ॥

सेतुनिर्माता रामु दोन्हीयी गुटणेंचे रक्षण करो आनी दशमुखालो अंतकु रामु दोन्हीयी जङ्घेचो रक्षण करो. विभिषणाक ऐश्वर्य दील्लोलो रामु दोन्हीयी पायांचे रक्षण करो आनी सर्वांक रमवौंचो रामु सर्व शरीराचे रक्षण करो (९)

एतां रामबलो पेतां रक्षा यःसुकृती पठेत्। स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत् ॥ १० ॥

जो पुण्यवान मनिषु ही रामबलयुक्त रामरक्षा पठण करता तो दीर्घायुषी, सुखी पुत्रवान विजयी आनी विनया शील जात्ता (१०)

पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः ।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः
॥ ११ ॥

पातळ, पृथ्वीतळ आनी आकाशंत संचार करचे, कपटानी गुप्त संचार करचे लोक रामनामानी सुरक्षित असिल्ले मनिषांक वांकुडे दोळचेनी पळोंवचाक सुद्धां जावना (११)

रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन् ।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥ १२ ॥

'रामु' म्हण जावो, 'राम भद्रु' म्हण जावो अथवा 'रामचंद्रु' म्हणजावो एस्सि

स्मरण करचो मनिषु पापांथाकून अलिप्त जावनु भोगु व मोक्षु प्राप्त करता (१२)

जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाऽभिरक्षितम्।
यः कण्ठे धारयेत् तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः
॥ १३ ॥

जगाक जिकुचो हो एक मात्र मन्त्रानी म्हळ्चारी रामनामानी मंतरसिल्लो वस्तु कोण गोवंटेरी धारण करता ताका सर्व सिद्धि हस्तगत जात्ता (१३)

वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत् ।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम् ॥ १४ ॥

वज्र पञ्जरासमान नाम ज्यांतु आरसा, एस्सले हे रामकवच जो स्मरण करता, तागेले आज्ञेचो केददाणयी भंगु जायना, तो सर्व स्थळारी विजय आनी कल्याण प्राप्त करता (१४)

आदिष्टवान् यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः। तथा लिखितवान् प्रातः प्रबुद्धो बुध कौशिकः ॥ १५ ॥

श्रीशंकरानी ही रामरक्षा स्वप्नांतु कस्सि सांगिली तशीची फल्लेफल्यारी उठायलेले बुध कौशिक ऋषिनी लिखित केली (१५)

आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम्। अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान् स नः प्रभुः ॥ १६ ॥

कल्पवृक्षानी भरलेले उपवनावरी आसिल्लो सर्व विफत्तीचो अंत जावनु आसिल्लो आनी तीन्हीयी लोकांक सर्वप्रकारारी रमवौंचो तो श्रीमान रामु अमगेलो नाथु जावनु आस्सा (१६)

तरुणौ रुपसम्पनौ सुकुमारौ महाबलौ।

पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ ॥ १७ ॥

तरुण, रुपसंपन्न, सुकुमार अत्यंत बलवान श्वेतकमळावरी विशाल नेत्राचो, वल्कलां आनी कृष्णमृगा चाम धारण करचे (१७)

फलमुलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ। पुत्रौ दशरथस्यतो भातरौ रामलक्ष्मणौ ॥ १८ ॥

फळामूळांचे आहार करचे, इंद्रियदमनशील, तपस्वी, ब्रह्मचर्यव्रतानी राबचे, दशरथाले पूत जावनु आसिल्ले ह्यो दोघे भभ्भाव रामु आनी लक्ष्मणु (१८)

शरण्यौ सर्वसत्वानां श्रेष्ठौ सर्व धनुष्मताम्। रक्षःकुलनिहन्तारौ त्रायतां नो रघूत्तमौ ॥ १९ ॥

सर्व प्राण्यांचे रक्षण करचे, सर्व धनुर्धारांत श्रेष्ठ आसिल्ले, राक्षसकुलाचो संहार करचे, ह्यो दोघें रघुश्रेष्ठ अमगेले रक्षण करोती (१९)

आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशावक्षयाशुगनिषंगसंगिनौ। रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथिसदैव गच्छताम् ॥ २० ॥

दोरी चढयलेले धनुषु घेत्तल्ले, बाणाक स्पर्श करचे, अक्षय जावनु आसिल्ले निषंग लागी धरलेले, रामलक्ष्मण मेग्गेले रक्षणाक जावनु मार्गांतु सदैव मेग्गेले मुखारी चमकून अस्सोती (२०)

संनद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा। गच्छन् मनोरथोऽस्मकं रामः पातु सलक्ष्मणः ॥ २१ ॥

सदा सज्ज असिल्ले, कवच धारण केल्लेले, खड्ग आनी बाण धारण करचे अमगेले चल्लुचे मनोरथ एस्सि लक्ष्मणासह आसिल्ले तरुण रामु अमगेले रक्षण करो (२१)

रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली। काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः ॥ २२ ॥

लक्ष्मणु ज्याचे फाटी मागशि अनुचरण करित आस्सा, एस्सले शूर, बलवान्, दशरथालो पूतु, पूर्ण ब्रह्मस्वरुपु, कौसल्यानंदनु, ककुत्स्थकुलोत्पन्नु, रघुश्रेष्ठु (२२)

वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः। जानकी वल्लभ श्रीमानप्रमेय पराक्रमः। २३ ॥

वेदांचे अंतीं आसिल्ले उपनिषदानी जाण जावचाक योग्य आसिल्लो, यज्ञाचो अधिपति,

आदिपुरुषोत्तमु (विष्णुरुपी), जानकीलो प्रियकरु, अतुल पराक्रमी आनी श्रीमान (२३)

इत्तेतानि जपन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः। अश्वमेधाधिकं पुण्यं संप्राप्नोति न संशयः ॥ २४ ॥

हीं नांवा जप्पुचे, श्रद्धेनी युक्त असिल्ले मेग्गेले (संकराले) भक्तां अश्वमेघ यज्ञाचे पुण्यापसी अधिक पुण्य पूर्णपणे मेळयतातीहांतु संशयु ना (२४)

रामं दुर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम् स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नरः ॥ २५ ॥

दुर्वे पत्तियेवरी श्यामळ, कमळ, लोचन आनी पीत वस्त्र नेसिल्ले रामाची जे दिव्य नावानी स्तुति करताती त्ये संसारी लोकची नयी (२५)

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरम्। काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम्। राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्त मूर्तिम्। वन्दे लोकभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ॥ २६ ॥

लक्ष्मणालो मलघोडो भावु, रघुश्रेष्ठ, सीतापति सुन्दर, ककुत्स्थलोत्पन्नु, करुणासमुद्रु गुणाची निधि विप्रांक प्रिय असिल्लो, धर्मशील राजश्रेष्टु सत्यवचनी, दशरथालो पुतु, श्यामळ शांतमूर्ति जावनु आसिल्लो, रावण शत्रु, रघुकुलोत्पन्नु, रघुलालु, तीळेवरी आस्सुचो, आनी लोकांक सर्वप्रकारानी रंजवंचो एस्सले रामाक हांव वंदन करता (२६)

रामाय रामभद्राय रामचंद्राय वेधसे। रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥ २७ ॥

रामाक, रामभद्राक, रामचंद्राक सर्व सृष्टिकर्ता जावनु आसिल्ले रघुनाथाक, प्रभूक, सीतापतीक नमस्कारु (२७)

श्रीराम राम रघुनंदन राम राम।
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम।
श्रीराम राम शरणं भव
राम राम ॥ २८ ॥

श्रीरामा, रामा, हे रघुनंदना, रामा रामा श्रीरामा, रामा हे भरताग्रजा, रामा रामा, श्रीरामा, रामा हे रणचण्डा, रामा, रामा श्रीरामा, रामा तूं मेग्गेलो रक्षण करचो, हे रामा, हे रामा (२८)

श्रीरामचन्द्र चरणौ मनसा स्मरामि। श्रीरामचन्द्र चरणौ वचसा गृणामि। श्रीरामचन्द्र चरणौ शिरसा नमामि। श्रीरामचन्द्र चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ २९ ॥

श्रीरामचन्द्राले चरण हांव मनानी स्मरितां. श्रीरामचन्द्राले चरण हांव वाणीनी स्तवितां. श्रीरामचन्द्राले चरण हांव मस्तकानी नमितां. श्रीरामचन्द्राले चरणांचे हांव शरण वत्तां (२९)

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः। सर्वस्व मे रामचन्द्रो दयालु र्नान्य जाने नैव जाने न जाने ॥ ३० ॥

रामु मेग्गेली माता रामचन्द्रु मेग्गेलो पिता मेग्गेलो नाथु रामु मेग्गेलो सखा रामचन्द्रु तो दयालु रामचन्द्रु मेग्गेलो सर्वस्व जावनु अस्सा हांव दुस्सरे कोणीयी, नेणा, नेणा कोणीचो नेणा (३०)

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे तु जनकात्मजा। पुरतो मारुतीर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥ ३१ ॥

ज्याचे उजवेतांतु लक्ष्मणु आस्सा आनी दावेतांतु जनकनंदिनी सीता अस्सा, ज्याचे मुखारी मारुती आस्सा त्ये रामचन्द्राक हांव नमस्कारु करतां (३१)

लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्। कारुण्यरुपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥ ३२ ॥

लोकांक रजवोंवचो, रणांगणांतु धैर्यशाली कमळ नेत्र रघुवंशश्रेष्ठु, कारुण्यरुपी त्ये करुणाकर श्रीरामचन्द्रांक हांव शरण वत्ता (३२)

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेंद्रियं बुद्धिमतां वरिष्टम्। वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥ ३३ ॥

मनाप्रमाणे ज्याचो वेगु आस्सा, वाऱ्याप्रमाणे ज्याचो जोर आस्सा, जो जीतेन्द्रिय जावनु बुद्धिमान लोकांत श्रेष्ठ अस्सा वायूलो पूतु, वानराचो समूहांतूलो मुख्यु एस्सले त्ये श्रीरामदूताक हांव शरण वत्ता (३३)

कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम्। आरुह्य कविता शाखां वन्दे वाल्मीकि कोकिलम् ॥३४ ॥

कवितारुपी खंध्यारी वेसून राम राम एस्सि गोड अक्षरां असिल्ले नांव गोड गायन करचे वाल्मीकि रुपी कुगिळाक हांव वन्दन करतां (३४)

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसंपदाम्। लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥ ३५ ॥

आफत्तांक दूर करचो,सर्व संपत्ति दीवचो लोकांक मनोरम जावनु दीस्सुचो एस्सि श्रीरामाक हांव पुनः पुन्हा नमस्कारु करतां (३५)

भर्जनं भवबीजानम्भर्जनं सुखसंपदाम् ।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम् ।। ३६ ।।

राम राम एस्सि गरजुचें, संसाराचे बीयांक भाजुन उड्डोवंचे सुखसंपत्ति मेळोवनु दीवंचे आनी यमदुतांक कडकडो हाडचो जावनु आस्सा (३६)

रामो राजमणि सदा विजयते रामं रमेशं भजे।
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः ।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽ-
स्म्यहमं रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम
मामुद्धर ।। ३७ ।।

राज श्रेष्ट रामु सदा विजयी जाता रामनाथ रामाक हांव भजता. जे रामान राक्षसांली सेना नाशु केल्ली, त्ये रामाक नमस्कारु. रामापसी अधिक श्रेष्ठ आनी उत्तम शरण वच्चाक योग्य स्थान ना. हांव रामालो दासु जावनु आस्सा. रामाचेरी केदनायी मेग्गेले चित्त लीन जावो, हे रामा मेग्गेलो उद्धारु करी (३७)

रामरामेति रामेति रमेरामे मनोरमे ।
सहस्त्रनाम ततुल्यं रामनाम वरानने ।। ३८ ।।

"राम, राम" एस्सी अथवा नुसतीच "राम" एस्सि म्हणतची ते मनोरम रामाचेरी हांव रमून आस्सा. हे सुन्दर वदने (पार्वती) ते रामनाम विष्णुसहस्त्रनामा तुतलेंची तुल्य जावनु आस्सा (३८)

इति श्रीबुधकौशिकविरचितं श्रीरामरक्षा स्तोत्रं संपूर्णम् श्रीरामचन्द्रार्पणमस्तु ।

ह्या प्रमाणे श्रीबुध कौशिकानी रचिल्ले श्रीरामरक्षा स्तोत्र संपूर्ण जाल्ले. श्रीसीतेसह रामचन्द्राक हे समर्पण केला (३९)

कठिण शब्दार्थ

कीलकु = शक्ति रक्षकु
विनियोगु = उपयोगु
जानु पर्यंत = घिप्परा पर्यंत, मुटवा पर्यंत
निषंग = तूण, बाण दवर्चे चील
भाल प्रदेश = ललाट, मस्तक